विचार बिन्दु

दानी कभी दुःख नहीं पाता, उसे कभी पाप नहीं घेरता। –ऋग्वेद

जीवन मे आमूल-चूल परिवर्तन ला रहा है डिजिटल इंडिया

देश में नोटबंदी के बाद डिजिटल पेमेंट में जबरदस्त इजाफा देखने को मिला। लोग कैश के बजाए डिजिटल मोड में बढ़चढ़ कर पेमेंट करने लगे है। यूपीआई पेमेंट को बढ़ावा मिलने लगा है। विशेषकर नोटबंदी के बाद भारत में लोगों पर डिजिटल पेमेंट का ऐसा क्रेज चढ़ा दी देश डिजिटल पेमेंट करने वाले देशों की लिस्ट में टॉप पर शामिल हो गया। देश में यूपीआई ट्रांजैक्शन करने वालों का आंकडा दिन-ब-दिन तेजी से बढ़ता ही जा रहा है। आज डिजिटल ट्रांजैक्शन के कई मोड उपलब्ध हैं और इसका इस्तेमाल करने वाले लोगों की तादात में जबरदस्त इजाफा हो रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में यूपीआई के जरिए लेनदेन में एक नई उपलब्धी हासिल हो गई है। कोरोना महामारी से डिजीटल लेन देन में तेजी से उछाल हो रहा है। यूपीआई के जरिए अगस्त में 10.72 लाख करोड़ रुपये के साथ 6.57 बिलियन (657 करोड़) लेनदेन रिकॉर्ड दर्ज किए जो 2016 से अभी तक में सबसे अधिक है। नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा जारी आंकड़ों से पता चला है कि यूपीआई लेनदेन का वित्त वर्ष 22 में 1 ट्रिलियन को पार कर गया। यूपीआई के बढ़ते इस्तेमाल के चलते लोगों को कैश साथ लेकर चलने की जरूरत नहीं पड़ती है। क्योंकि ज्यादातर दुकानदार भी ऑनलाइन पेमेंट को स्वीकार करते हैं।

देश में डिजिटल भुगतान का चलन तेजी से बढ़ रहा है। 2016 में नोटबंदी हुई तो बड़े पैमाने पर लोगों ने डिजिटल पेमेंट का विकल्प चुना। कोविड-19 महामारी की वजह से इस कार्य में और तेजी आई है। अनुमान लगाया जा रहा है कि भारत में साल 2025 तक डिजिटल पेमेंट्स की आदत में 71.7 फीसदी तक का इजाफा हो जाएगा। वहीं कैश और चेक से पेमेंट बस 28.3 फीसदी ही रह जाएगा। इस हिसाब से देखा जाये तो डिजिटल भुगतान 10 गुना अधिक बढ़ गया है। इतनी तेज गति से बढ़ना काफी आश्चर्यजनक है। वित्तीय लेन देन में आसानी डिजिटल पेमेंट सिस्टम के लिए सबसे अच्छी बात है। आपको कैश ढोने, प्लास्टिक कार्ड, बैंक या एटीएम की लाइन में लगने की जरूरत नहीं है। खासतौर पर जब आप सफर में हों तो खर्च करने का यह सेफ और इजी विकल्प है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के अनुसार डिजिटल इंडिया यानि समय, श्रम और धन की बचत। डिजिटल इंडिया यानि तेज़ी से लाभ, पूरा लाभ। डिजिटल इंडिया यानि मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिम गवर्नेंस. डिजिटल इंडिया यानि सबको अवसर, सबको सुविधा, सबकी भागीदारी। डिजिटल इंडिया यानि सरकारी तंत्र तक सबकी पहुंच, डिजिटल इंडिया यानि पारदर्शी, भेदभाव रहित व्यवस्था और भ्रष्टाचार पर चोट करना है।

भारत डिजिटल पथ पर तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। ड्राइविंग लाइसेंस, बर्थ सर्टिफिकेट पानी बिजली के बिल, इनकम टैक्स रिटर्न आदि अनेक कामों के लिए अब प्रक्रियाएं डिजिटल इंडिया की मदद से बहुत आसान, बहुत तेज हुई है।

आर्थिक क्षेत्र में डिजिटल लेन देन को बढ़ावा दिया जा रहा है। रिजर्व बैंक आफ इंडिया के गवर्नर शक्तिकांत दास ने डिजिटल लेन देन को बढ़ावा देने के लिए तीन नये डिजिटल भुगतान की पहल की है। मुंबई में 20 सितम्बर को आयोजित ग्लोबल फिनटेक फेस्ट-2022 में आरबीआई गवर्नर ने यूपीआई पर रूपे क्रेडिट कार्ड, यूपी आईलाइट और भारत बिल पे क्रास बार्डर बिल पेमेन्ट सोल्यूशंस सेवा को लांच किया है। इन सेवाओं के शुरू होने के बाद 30 करोड़ और नए लोग डिजिटल पेमेन्ट के इस सिस्टम से जुड़ सकेंगे।

ऑनलाइन इनवॉइस पेमेंट से कंपनियों को समय बचाने में मदद मिलती है। वे तेज होते हैं और ठाहकों के लिए अधिकतम प्रयास बचाते हैं। यह भौतिक लेन देन में शामिल अत्यधिक लागत को कम करने में भी मदद करता है। यह कागज के महत्वपूर्ण मात्रा को कम करने में भी मदद करता है जो मुद्रित किया जाएगा और इनवॉइस भेजने के लिए उपयोग किया जाएगा।

भारत में डिजिटलाइजेशन एक नवाचार है। ग्रामीण क्षेत्र में मनरेगा जैसी योजना में श्रमिकों को अब सीधे बैंक खाते में भुगतान मिलता है। इससे पहले लेन-देन में हेराफेरी और भ्रष्टाचार की गुंजाइश ज्यादा रहती थी। छात्रवृत्ति में भी अब किसी प्रकार का घोटाला नहीं किया जा सकता।

किसानों को खतौनी लेनी हो अथवा अन्य दस्तावेज, एब कुछ आसानी से मिल जाता है इसके लिए रजिस्टर नहीं खोजने पड़ते। जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन ला रहा है डिजिटल इंडिया डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा आरंभ की गई एक ऐसी अनूठी पहल है जिसका उद्देश्य सभी छोटे और बड़े सरकारी विभागों को डिजिटल रूप देकर उनकी गति को तीव्र से तीव्रतम कर देना है। इससे लाभ यह होगा कि बिना कागज के प्रयोग के सभी सरकारी सेवाएं इलेक्ट्रॉनिक रूप से जनता तक निर्वाध रूप से पहुंच सकेंगी व अविलंब कार्य को पूरा किया जा सकेगा। भारत के हर नागरिक को डिजिटल दुनिया से जोड़ने के लिए सरकार ने यह बेहद महत्वपूर्ण और सही कदम उठाया है जो आने वाले भविष्य में मील का पत्थर सिद्ध होगा। इससे देश की अर्थव्यवस्था में अत्यंत सुधार तो होगा ही साथ में देश में नई टेक्नोलॉजी का भी विकास होगा।

डिजिटल इंडिया योजना का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य यह कि ठाामीण इलाकों को हाई स्पीड इंटरनेट के माध्यम से जोड़ना भी है। देखा जाए तो डिजिटल इंडिया के तीन कोर घटक हैं : पहला, डिजिटल आधारभूत ढांचे का निर्माण करना दूसरा, इलेक्ट्रॉनिक रूप से सेवाओं को जनता तक पहुंचाना और तीसरा, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना।

मोबाइल और वैकल्पिक भुगतान भारतीय युवाओं में लोकप्रिय बने हुए हैं। ई-कामर्स के कारण उम्मीद की जाती है कि 2022 तक ऐसे लेन-देन की संख्या पीओएस ट्रांसैक्शन से बढ़ जाएगी। ऐसा अनुमान है की अगले कुछ सालों में डिजिटल पेमेंट व्यवसाय में आशातीत वृद्धि होगी। मौजूदा दौर में भारतीय खुदरा बाजार क्रान्तिकारी बदलाव से गुजर रहा है। उपभोक्ता भिन्न चैनल्स (स्त्रोतो) से डिजिटल खरीदारी कर रहे हैं।

ई-कॉमर्स या इ-व्यवसाय इंटरनेट के माध्यम से व्यापार का संचालन है। न केवल खरीदना और बेचना, बल्कि ग्राहकों के लिये सेवाएं और व्यापार के भागीदारों के साथ सहयोग भी इसमें शामिल है। ई-पेमेंट को हम इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट के नाम से भी जानते हैं ई-पेमेंट या इलेक्ट्रॉनिक ई-पेमेंट किसी भी डिजिटल फाइनेंसियल पेमेंट लेनदेन है जिसमें दो या दो से अधिक पार्टियों के बीच मनी ट्रान्सफर शामिल है।

इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट इंटरनेट आधारित प्रक्रियाएं हैं। जो ग्राहक या उपयोगकर्ता को उनकी खरीदारी आदि के लिए ऑनलाइन पेमेंट करने में मदद करती है। इंटरनेट पर पैसे ट्रांसफर करने के लिए। इनमें मुख्य है इलेक्ट्रॉनिक कैश, स्मार्ट कार्ड और डेबिट क्रेडिट, गूगल पे, फोन पे आदि। जब हम इलेक्ट्रॉनिक मीडियम का यूज करके पेमेंट करते हैं तो वह इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट कहलाता है जैसे-जैसे ई-कॉमर्स का यूज बढ़ता जा रहा है वैसे वैसे इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट का भी यूज बढ़ता जा रहा है। ऑनलाइन इनवॉइस पेमेंट से कंपनियों को समय बचाने में मदद मिलती है। वे तेज होते हैं और ग्राहकों के लिए अधिकतम प्रयास बचाते हैं। यह भौतिक लेन देन में शामिल अत्यधिक लागत को कम करने में भी मदद करता है। यह कागज के महत्वपूर्ण मात्रा को कम करने में भी मदद करता है जो मुद्रित किया जाएगा और इनवॉइस भेजने के लिए उपयोग किया जाएगा।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 1 अक्टूम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आश्विनी मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 3:11 तक, आयुष्मान योग सांय 7:58 तक, कौलव करण प्रातः 9:41 तक, चन्द्रमा रात्रि 3:11 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कन्या, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग रात्रि 3:11 तक है। आज शुक्र अस्त पूर्व में रात्रि 8:50 से होगा। आज छठ पूजन और मेला शिला माता आमेर में है। आज तप षष्ठि है और जैन औली आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:51 से 9:70 तक, चर 12:16 से 1:45 तक, लाभ-अमृत 1:45 से 4:42 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:23, सूर्यास्त 6:10

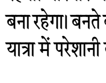

मेष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ने का भय बना रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

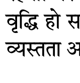

सिंह

घर-परिवार में आपसी मतभेद बढ़ने का भय बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

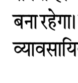

धनु

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

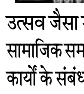

वृष

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

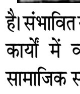

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

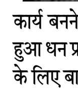

मकर

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। शुभ-मांगलिक कार्य कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मिथुन

आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

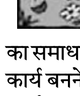

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

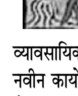

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

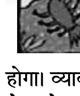

वृश्चिक

व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

सच्चाई व सादगी की प्रतिमूर्ति कर्तव्यनिष्ठ गांधीवादी नायक शास्त्री जी के जीवन के संस्मरण

नाटे कद और हमेशा मुस्कराता हुआ चेहरा रखने वाले शास्त्री जी जवाहर लाल के उत्तराधिकारी बन कर देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। वास्तव में शास्त्री जी जहाँ एक तरफ आजादी के लिये अपना सर्वस्व कुर्बान करने का संकल्प रखते थे वहीं दूसरी तरफ वो मितभाषी और आत्म सम्मान के धनी थे। मात्र 17 साल की उम्र में वे जेल गये थे। उन्होंने नो साल जेल के अंदर बिताये। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी कायदे-कानून की अवेहलना नहीं होने दी थी, वो तो सही मायनो के अंदर बापू जी के आदर्शो को मानने वाले उनके सच्चे अनुयायी थे। उनमे ना किसी भी पद और सम्मान का लालच था और ना ही पद का अभिमान था। 1965 की भारत पाकिस्तान की लड़ाई के समय पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा को पार करके पाकिस्तान की धरती में घुस कर आक्रमण कर लाहोर के नजदीक पहुच जाने का साहसिक फैसला लेने वाले शास्त्री जी ही थे, उनके इस निर्णय की प्रसंसा तत्कालीन सेनाध्यक्ष जनरल चौधरी और वायुसेना के मुखिया एयर मार्शल अर्जुन ने भी की थी। 2 अक्तूबर 2022 को जननायक शास्त्रीजी के 118वें जन्म दिन पर 134 करोड़ भारतियों का उनके श्री चरणों में कोटि-कोटि नमन और श्रद्धा सुमन।

आत्म सम्मान के धनी:-आजादी के दिवाने शास्त्री जी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जेल में थे तब की घटना। आत्म सम्मान के धनी आजादी के दिवाने शास्त्री जी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जेल में थे तब घर पर उनकी पुत्री गम्भीर रूप बीमार थी, उनके साथियों ने उन्हें जेल से बाहर आकर पुत्री को देखने और उसकी देखभाल करने लिये आग्रह किया, शास्त्री की पैरोल भी स्वीकृत हो गई, परन्तु शास्त्री जी ने पैरोल पर छूटकर जेल से बाहर आना अपने आत्म सम्मान के विरुद्ध समझा! क्योंकि वे यह लिखकर देने को तैयार नहीं थे कि बाहर निकलकर वे स्वतन्त्रता आन्दोलन में कोई काम नहीं करेंगे। अंत में मजिस्ट्रेट को शास्त्रीजी को पन्द्रह दिनों के लिए बिना शर्त छोड़ना पड़ा। वे घर पहुँचे, लेकिन उसी दिन बालिका के प्राण-पखेरू उड गए। शास्त्री जी ने कहा, जिस काम के लिए मैं आया था, वह पूरा हो गया है। अब मुझे जेल वापस जाना चाहिये। और उसी दिन वो जेल वापस चले गये।

कभी भी कायदे कानून की अवेहलना नहीं होने दी:- जब शास्त्रीजी उत्तर प्रदेश में गृह मंत्री थे, तब एक दिन शास्त्री जी की मौसी के लड़के को एक प्रतियोगिता परीक्षा में बैठना पड़ा। उसे कानपुर से लखनऊ जाना था। गाडी

डा.जे.के.गर्ग

छूटने वाली थी, इसलिए वह टिकट नहीं ले सका। लखनऊ में वह बिना टिकट पकड़ा गया। उसने शास्त्री जी का नाम बताया। शास्त्री जी के पास फ़ोन आया। शास्त्री जी का यही उत्तर था, हाँ है तो मेरा रिश्तेदार! किन्तु आप नियम का पालन करें। यह सब जानने के बाद मौसी नाराज़ हो गई। एक बार उनका सगा भांजा.. की परीक्षा में सफल हो गया, परन्तु उसका नाम सूची में इतना नीचे था कि चालू वर्ष में नियुक्ति का नंबर नहीं आ सकता था, बहन ने अपने भाई से उसकी नियुक्ति इसी वर्ष दिलाने को कहा, अगर शास्त्री जी जरा सा इशारा कर देते तो उसे इसी वर्ष नियुक्ति मिल सकती थी। परन्तु शास्त्रीजी का सीधा उत्तर था- 'सरकार को जब आवश्यकता होगी, नियुक्ति स्वत: ही हो जाएगी।' नि:संदेह शास्त्रीजी ईमानदारी की साक्षात् मूर्ती थे। नियमों के पालन में उन्होंने कभी भी अपने नाते-रिश्तेदारों का भी पक्ष नहीं लिया, जबकि कई मर्तबा उनके अधीनस्थ अधिकारी, उनके रिश्तेदार की नियम विरुद्ध भी सहायता करने को तैयार थे।

नैतिकता के आधार पर छोड़ दिया था मंत्री पद:- 1956 में तमिलनाडू के अरियालपुर में हुई रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेवारी लेते हुए शास्त्रीजी ने रेलवे मंत्री का पद छोड़ दिया था। क्या हम वर्तमान समय मंत्रियों से ऐसे आचरण की अपेक्षा रख सकते हैं ? कदापि नहीं।

सहनशीलता में भी उनकी महानता परिलक्षित होती थी:- 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय सुरक्षा कारणों से हवाई हमले की घंटी बज सकती थी। उन दिनों सुरक्षा के लिये प्रधान मंत्री भवन मे भी खाई बनाई गई थी। सुरक्षा कर्मियों ने प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री से अनुरोध किया- 'आज हमले की आशंका अधिक है, आप घंटी बजते ही तुरंत खाई में चले जायें।' किंतु दैवयोग से हमला नहीं हुआ। अगले दिन सुबह देखा गया कि बिना बमबारी के खाई गिरकर पट गई है। खाई बनाने वालों तथा उसे पास करने वालों की यह अक्षम्य लापरवाही थी। यदि वे उस रात खाई के अंदर होते तो क्या होता, सुनकर रौंगटे खडे हो जाते हैं। देश के प्रधानमंत्री का जीवन कितना मूल्यवान होता है? वह भी युद्धकाल में? अन्य व्यवस्था अधिकारियों ने भले ही इस प्रसंग पर कोई कार्यवाही की हो, किन्तु शास्त्री जी ने संबंधित व्यक्तियों के प्रति कोई कठोरता नहीं बरती अपितु बालकों की भाँति क्षमा कर दिया। ना क्रोध और ना ही शिकायत। साधारणतया लोग घर में तो वजह-बेवजह अपने अधिकार एवं डांट-फटकार से काम करवाते हैं किन्तु घर के बाहर सज्जनता तथा उदारता के प्रतीक बने रहने का स्वागं करते हैं, किन्तु शास्त्रीजी इसके अपवाद थे।

ना कोई लालच और ना ही पद का अभिमान:- घटना 1965 की है, एक दिन प्रधानमंत्री शास्त्रीजी एक कपडे की मिल देखने मिल के मालिक, मिल के उच्च अधिकारियों तथा कई विशिष्ट लोगों के साथ मिल को देखने गये थे। मिल देखने के बाद शास्त्रीजी मिल के गोदाम में पहुंचे तो उन्होंने मालिक को कुछ साडियां दिखलाने को कहा। मिल मालिक ने एक से एक खूबसूरत साडियां उनके सामने फैला दीं। शास्त्रीजी ने साडियां देखकर कहा- 'साड़ियां तो बहुत अच्छी हैं, पर इनकी कीमत क्या है?' मिल मालिक बोला- 'जी, यह साडी 800 रुपए की है और यह वाली साडी 1000/- की है।' शास्त्रीजी बोले- 'यह तो मेरे बजट से बहुत ज्यादा है, सस्ती साड़ियां बताओं।' दूसरी साड़ियां दिखलाते हुये मिल मालिक बोले- 'देखिये यह साडी 500 रुपए की है और यह 400 रुपए की।' अरे भाई, यह भी बहुत महंगी है। मुझ जैसे गरीब के लिए कम मूल्य की साडियां दिखलाइए, जिन्हें मैं खरीद सकूं। मिल मालिक कहने लगा, 'वाह सरकार, आप तो हमारे प्रधानमंत्री हैं, आप गरीब कैसे हो सकते हैं? आप से कीमत कौन मांग रहा है, हम तो ये साड़ियां आपको भेंट कर रहे हैं।' 'नहीं भाई, मैं साड़ियाँ भेंट में नहीं लूंगा।' 'क्यों साहब? हमें यह अधिकार है कि हम अपने प्रधानमंत्री को भेंट दें।' 'हां, मैं प्रधानमंत्री हूं, शास्त्रीजी ने बडी शांति से जवाब दिया- 'पर इसका अर्थ यह तो नहीं कि जो चीजें मैं खरीद नहीं सकता, वह भेंट में लेकर अपनी पत्नी को पहनाऊं। भाई, मैं प्रधानमंत्री हूं पर हूं तो गरीब ही।' देश के प्रधानमंत्री ने कम मूल्य की साड़ियां ही दाम देकर अपने परिवार के लिए खरीदीं। ऐसे महान थे हमारे शास्त्रीजी, जिन्हें कोई लालच था और ना ही पद का अभिमान, उन्होंने जीवन पर्यन्त अपने पद का कोई फायदा नहीं उठाया।

नहीं करते थे सरकारी गाडी का

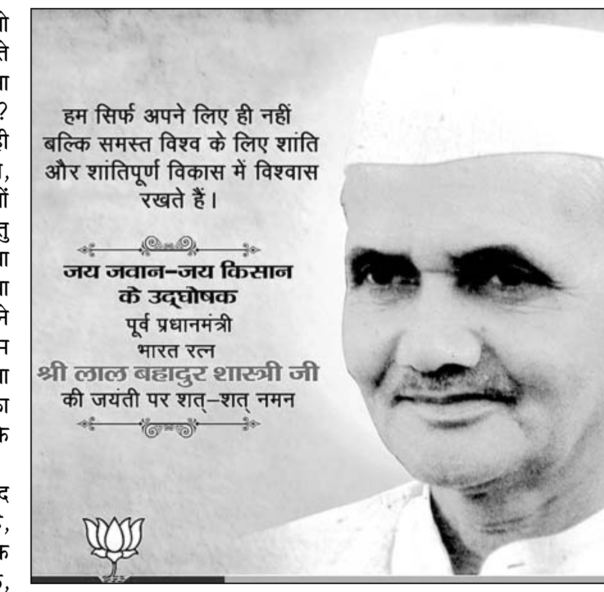

इस्तेमाल:- लाल बहादुर शास्त्री के बेटे सुनील शास्त्री ने अपनी किताब 'लाल बहादुर शास्त्री, मेरे बाबूजी', में देश के पूर्व प्रधानमंत्री के जीवन से जुड़े कई आत्मीय प्रसंग साझा किए हैं। उन्होंने अपनी किताब में लिखा है कि उनके पिता सरकारी खर्चे पर मिली कार का प्रयोग नहीं करते थे। एक बार उन्होंने अपने पिता की कार चला ली तो उन्होंने किलोमीटर का हिसाब कर पैसा सरकारी खाते में जमा करवाया था।

हैदराबाद के पूर्व निजाम मीर उस्मान अली ने 1965 में ने युद्ध के फंड के प्रति पांच टन यानि 5000 किलो सोना दान में दिया दिया। आज के बाजार मूल्य के रूप में निजाम का योगदान करीब तीन अरब रुपये का बनता है, यह भारत में किसी भी व्यक्ति या संगठन द्वारा अब तक का सबसे बड़ा योगदान है। इस सोने को लेने के लिये लाल बहादुर खुद हैदराबाद गये और और मीर उस्मान अली को धन्यवाद दिया को।

घर से हटवा दिया था सरकारी कूलर:- शास्त्रीजी मन और कर्म से पूरे गांधीवादी थे। एक बार उनके घर पर सरकारी विभाग की तरफ से कूलर लगाया गया।

जब देश के पूर्व प्रधानमंत्री को इस बारे में पता चला तो उन्होंने परिवार से कहा, इलाहाबाद के पुश्तैनी घर में कूलर नहीं है। कभी धूप में निकलना पड़ सकता है। ऐसे आदतें बिगड़ जाएंगी। उन्होंने तुरंत सरकारी विभाग को फोन कर कूलर हटवा दिया।

फटे कुर्ते से बनवाते थे रुमाल:- शास्त्रीजी बहुत कम साधनों में अपना जीवन जीते थे। वह अपनी पत्नी को फटे हुए कुर्ते दे दिया करते थे। उन्हीं पुराने कुर्तों से रुमाल बनाकर उनकी पत्नी उन्हें प्रयोग के लिए देती थीं।

अकाल के दिनों में रखा था एक दिन का व्रत:- अकाल के दिनों में जब देश में भुखमरी की विपत्ति आई तो खुद शास्त्री जी ने नियमित व्रत रखा और परिवार को भी यही आदेश दिया कि वे सब एक दिन का उपवास रखें और तब शास्त्री जी ने कहा कि देश का हर नागरिक एक दिन का व्रत करे तो भुखमरी की समस्या का सामना किया जा सकता है।

शास्त्री जी के बेटे सुनील शास्त्री कहते हैं, 'बाबूजी देश में शिक्षा सुधारों को लेकर बहुत चिंतित रहते थे। अक्सर हम भाई-बहनों से कहते थे कि देश में रोजगार के अवसर बढ़े इसके लिए बेहतर मूल्य परक शिक्षा की जरूरत है।'

शास्त्रीजी की टेबल पर रहती थी हरी दूब:- सुनील शास्त्री ने बताया, बाबूजी की टेबल पर हमेशा हरी घास रहती थी। एक बार उन्होंने बताया था कि सुंदर फूल लोगों को आकर्षित करते हैं लेकिन कुछ दिन में मुरझा कर गिर जाते हैं। घास वह आधार है जो हमेशा रहती है। मैं लोगों के जीवन में घास की तरह ही एक आधार और खुशी की वजह बनकर रहना चाहता हूं।

क्या ही अच्छा होता अगर आज भी देश को शास्त्री जी जैसा जननायक मिलता ।।

जन नायक लाल बहादुर जी के जन्म दिन पर हम सभी देश वासी उनकी कर्तव्य निष्ठा सत्यता निर्भीकता ईमानदारी देश प्रेम सादगी और सरलता से प्रेरणा लें और जननायक शास्त्री जी के जीवन के अद्भुत मर्मस्पर्शी प्रेरणादायक घटनायें हमारे जीवन को आलोकित कर के हमें सही अर्थों में राष्ट्र भक्त बनाये।

–डा.जे.के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

आस्था

अजमेर। माँ का सरल सादा जीवन। अपने ठाकुरजी की सेवा। पूजा पाठ, पास के मंदिर में मंगला आरती और संध्या आरती। व्रत उपवास। अपनी आस्था के अनुरूप 'धरम-पुन्ना।' पास पडोस में रहने वाली अपनी हम उम्र महिलाओं से सत्संग। पिताजी की पुण्य तिथि पर मंदिर के पंडित को घर बुला कर जिमाना। सारा खाना खुद बनाती। मुझे गऊग्रास, कुत्ते की रोटी, नंगे पांव जा कर देना होता। अस्पताल और मेडिकल कॉलेज के पास ही घर था। साथ काम करने वाले डॉक्टर-छात्र मुझे, गाय, कुत्ते को नंगे पाव रोटी खिलाते देख चौंकते थे। क्या सचमुच मुझे जानवरों के प्रति इतनी श्रद्धा है। बाद मे मेडिकल कॉलेज में मुझे कुत्ते पर एक्सपेरीमेंट करते देख उन्हे लगता, अजीब ढकोसला है।

मुझे नहा-धोकर हाथ जोड कर पंडितजी को जिमाना है। उनकी जूंठी थाली खुद उठानी है। पांव छू कर उन्हे दक्षिणा देनी है। माँ की मान्यता है सब इसी प्रकार होने से ही पुण्य मिलेगा। स्वर्गीय की आत्मा को शान्ति मिलेगी। उन्हे मोक्ष मिलेगा।

मैं कलकत्ते में पढ़ा-लिखा हूं। मेरी विचारधारा से अवगत लोगों को समझाना मुश्किल है। हर बात का बौद्धिक पक्ष ही अहम नहीं होता। धर्म की अवधारणा आस्था का प्रश्न है। माँ की आस्था उनकी है। बेटे के रूप में उनकी हर आस्था में आस्था रखना मेरा धर्म है।

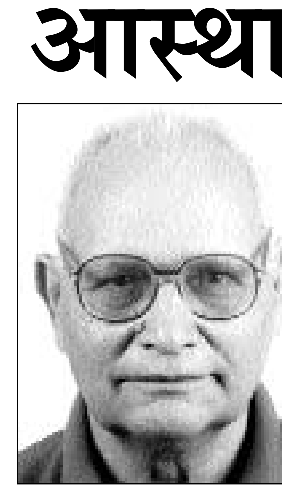

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

मैं सहर्ष सब कुछ करूंगा। मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगा जिससे उनको लगे, उनका 'जीवन' बिगड़ गया है, वे 'पाप' की भागीदार हो गई हैं। उनके मन को दुख पहुंचे और वह अपने आप को बेबस महसूस करे, मैं ऐसा कुछ नहीं होने दूंगा। अपने वामपंथी मित्र से चिढ़ कर मैंने कहा-"वे गाय की पूंछ पकड कर वैतरणी पार कर 'मोक्ष' प्राप्त करेंगी यह उनकी आस्था है।

आप आई. सी. यू. में भर्ती हो वेन्टीलेटर पर सवार, डॉक्टर की दुम पकड मोक्ष प्राप्त करना चाहते हैं, आपका स्वागत है, आपके लिए वैसा ही होगा।" अपने विचारों और धारणाओं को इन्टलेक्चुअल प्रोपर्टी - बौद्धिक संपदा- के बतौर प्रतिपादित करना आज के शिक्षित वर्ग का शगल हो गया है। पारिवारिक और परिवारेत्तर स्वरूप में एक अनकहा, अव्याख्यायित वेदना-संवेदना का रिश्ता होता है, यह उनकी समझ के परे है। यही रिश्तों की गहराई और विश्वसनीयता की कसौटी होता है, उनकी तार्किक बुद्धि इसे नहीं स्वीकारती।

आधुनिक, सभ्रांत और बुद्धिजीवी होने की प्रक्रिया में हम जीवन की सरसता, सरलता और स्वाभाविकता को खो रहे हैं। आधुनिक जीवन शैली में रंगते जा रहे है। मानव समाज में संबंधों की सहजता, आत्मीयता, स्नेहसिक्तता गायब हो रही है। इन्हें सहेजा कैसे जाये?

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

उदयपुर की बेटी ने मैनचेस्टर में देश का मान बढ़ाया

उदयपुर, (कासं)। बेटियां देश व दुनियां में अपनी सफलता के झंडे गाड़ रही है। युवाओं की दुनियां 'वन यंग वर्ल्ड' में शामिल होने गई उदयपुर की बेटी तसनीम मेहज़बीन ने देश, प्रदेश व मेवाड़ का नाम गौरवान्वित किया है। राजस्थान से जाने वाली वह एक मात्र सदस्य थी। दुनियां के 201 देशों से युवा इसमें शामिल हुए। जिन्हें उनकी बुद्धि परीक्षण, अपने क्षेत्र में किए गए कौशलपूर्ण कार्यो व समाजसेवा में दिए जा रहे योगदान को लेकर यह अवसर मिला।

- **'वन यंग वर्ल्ड' (युवाओं की दुनियां) समिट' में भाग लिया**
- **प्रदेश की एक मात्र सदस्य जो शामिल हुई इस समिट में**
- **दुनियाभर के 201 देशों के युवाओं इसमें भाग लिया**

उदयपुर की बेटी बोहरा समुदाय की तसनीम पत्नी फखरी भोजियावाला ने बताया कि यूके के गैर लाभकारी संगठन 'वन यंग वर्ल्ड' द्वारा इसका आयोजन प्रतिवर्ष होता है। तसनीम ने

उदयपुर की बेटी तसनीम मेहज़बीन ने मैनचेस्टर में हुई 'वन यंग वर्ल्ड' समिट में भाग लेकर प्रदेश व मेवाड़ का गौरवान्वित किया।

बताया कि इस समिट के लिए उनके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों, लीडरशिप के कार्य व नवाचार के कार्यों के आधर पर चार चरणों को पार करने के बाद हुआ। चार दिवसीय इस समिट में दुनियांभर से उन युवाओं को चुना गया जो अपनी तीव्र बुद्धि की क्षमता से अपने कॅरियर को आगे बढ़ा रहे है। दुनियांभर से आने वाले ये यंगस्टर जो कि वैश्विक, राष्ट्रीय कंपनियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, यूनिवरसिटी स्कॉलर्स सहित अलग ही सोच रखने वाले युवाओं को इसमें शामिल किया जाता है। सम्मीट में दुनिया के जाने माने लीडर्स व अपने दम पर दुनियां बदलने वाली शख्सियतें इन यंगस्टर के काउंसलर बनते है और उनकी कार्यप्रणाली व बुद्धिक्षमता का परीक्षण कर उन्हें प्रोत्साहित करते है। समिट में दुनियाभर के 201 देशों से 2000 से अधिक लोग हिस्सा बने।

तसनीम फखरी ने बताया कि वे चाहती है कि दुनियांभर में शिक्षा पर काम हो और सभी को क्वालिटी एज्युकेशन (बेहतर शिक्षा) मिले इसके लिए प्रयास होने चाहिए। तसनीम वर्तमान में दवाई कंपनी नोर्वाटीज़ में कार्यरत है और उन्हें कंपनी की ओर से यह अवसर मिला है। देशभर से कुल 12 युवा इसमें शामिल हुए। इनकी की माता मेहज़बीन मगर भी शिक्षा के क्षेत्र में वर्षो से कार्यरत होकर राजस्थान के कई विद्यालयों सहित करीब 20,000 से अधिक छात्रों को हैण्डराइटिंग व अंग्रेजी भाषा सिखाने में सहयोग कर चुकी है।

तसनीम ने कहा कि समिट के दौरान उन्हें राजनीति, फिल्म, खेल से जुड़ी हस्तियों जैसे प्रिंस हेरी, मेगन मार्कल, इब्तिहाज मुहम्मद, हलीमा एडन सहित कई बड़ी हस्तियों से मिलने का मौका मिलता है। जहां ये बड़ी हस्तियां अपने जीवन व कैरियर के शुरूआत दिनों के संघर्ष की कहानियां भी इनसे साझा करते है। इसमें आने वाले स्पीकर्स अपने जीवन की सच्ची घटनाओं से प्रेरित करते है। जिनमें प्रकृति को बेहतर बनाने, इकोनॉमी को अपलिफ्ट करने, वेस्ट चीजों को कैसे रिड्यूज कर काम में लेने योग्य बनाएं और जेंडर इक्वेलिटी आदि शामिल है।

आक्रोशित छात्र-छात्राओं ने धरना दिया

सरवाड़, (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सरवाड़ में कार्यरत प्रधानाचार्य वीरेश कुमार शर्मा का तबादला हो जाने के बाद छात्र छात्राओं में आक्रोश भड़क गया वही शिक्षा विभाग के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए छात्र-छात्राएं कक्षाओं से विद्यालय के मुख्य द्वार तक पहुंच गए और नारेबाजी करते हुए तबादल ा निरस्त करने की मांग को ले कर धरने पर बैठ गए।

- **सरवाड़ में कार्यरत प्रधानाचार्य वीरेश कुमार शर्मा का तबादला रूकवाने के लिए छात्रों ने नारेबाजी की, समझाईश के बाद माने छात्र**

जिसके चलते शिक्षक शिक्षिकाओं के हाथ पांव फूल गए जिसके बाद मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रामेश्वर प्रसाद झरोटिया मौके पर पहुंचे और आक्रोशित छात्र-छात्राओं से समझाइश की।

इस दौरान छात्र-छात्राओं ने कहा कि तबादला निरस्त नहीं किया तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा।